चिंतन

अनिश्चितकाल तक प्रदर्शन का हक नहीं



सियासत

प्रो .(डॉ) मनोज दयाल

लोकतंत्र में असहमति और प्रदर्शन का अधिकार है, लेकिन विरोध के नाम पर दूसरों के अधिकारों को कुचलने की छूट भी नहीं दी जा सकती। सार्वजनिक स्थानों पर अनिश्चितकाल तक कब्जा जमाकर बैठ जाना और आम लोगों की जिंदगी को बाधित करना किसी भी सूरत में उचित नहीं ठहराया जा सकता। सुप्रीम कोर्ट की ताजा टिप्पणी इसी संतुलन की जरूरत को रेखांकित करती है। दिल्ली में मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ हुए प्रदर्शन से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए शीर्ष अदालत ने स्पष्ट किया कि किसी भी संगठन को किसी सार्वजनिक स्थल पर अनिश्चितकाल तक प्रदर्शन करने का हक नहीं है। प्रदर्शन के लिए निर्धारित स्थानों पर भी समय-सीमा होनी चाहिए, ताकि दूसरे संगठनों को भी अपनी बात रखने का अवसर मिल सके। लोकतंत्र में विरोध का अधिकार किसी एक संगठन की स्थायी संपत्ति नहीं हो सकता। दरअसल, सार्वजनिक स्थानों पर लंबे समय तक चलने वाले धरने-प्रदर्शनों का असर केवल यातायात तक सीमित नहीं रहता। इससे दुकानदारों, रेहड़ी-पटरी वालों, दिहाड़ी मजदूरों, नौकरीपेशा लोगों, विद्यार्थियों और मरीजों तक को परेशानी उठानी पड़ती है। दिल्ली के व्यापारिक संगठनों ने अदालत में दावा किया कि त्योहारों के सीजन में प्रदर्शनों के कारण कारोबारियों को करीब दो हजार करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। किसी के विरोध के अधिकार की कीमत दूसरे नागरिकों को अपनी रोजी-रोटी गंवाकर नहीं चुकानी चाहिए। हालांकि, पूरे मामले का दूसरा पहलू भी उतना ही अहम है। प्रदर्शनकारियों को पुलिस कार्रवाई, हिरासत और निगरानी के नाम पर मनमानी का सामना नहीं करना चाहिए। सुनवाई के दौरान करीब सात हजार लोगों को हिरासत में लिए जाने और प्रदर्शनकारियों की निगरानी के कानूनी आधार पर सवाल उठाए गए। सरकार और पुलिस को यह स्पष्ट करना होगा कि शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई किस कानून और किन परिस्थितियों में की गई। यही कारण है कि प्रदर्शन के अधिकार और सार्वजनिक व्यवस्था के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है। सरकार और प्रशासन की जिम्मेदारी है कि वे शांतिपूर्ण प्रदर्शन के लिए पर्याप्त और सुविधाजनक स्थान उपलब्ध करवाएं। इन स्थानों का निर्धारण पारदर्शी नियमों के आधार पर हो और सभी संगठनों को समान अवसर मिले। दूसरी ओर, पुलिस को भी कानून के दायरे में रहकर कार्रवाई करनी चाहिए। शांतिपूर्ण प्रदर्शन और हिंसक या अवैध गतिविधियों के बीच स्पष्ट अंतर किया जाना जरूरी है। प्रदर्शन आयोजित करने वाले संगठनों की जिम्मेदारी भी कम नहीं है। उन्हें यह समझना होगा कि लोकतांत्रिक अधिकारों के साथ सामाजिक दायित्व भी जुड़े हैं। यदि किसी आंदोलन के कारण सड़कें बंद होती हैं, सार्वजनिक परिवहन बाधित होता है या कारोबार ठप पड़ता है तो इसकी जवाबदेही तय होनी चाहिए। कई बार लंबे समय तक चलने वाले धरने इस बात का संकेत होते हैं कि संबंधित पक्षों की शिकायतों का समाधान नहीं हो पा रहा। प्रशासन को समय रहते बातचीत करनी चाहिए, ताकि असंतोष टकराव में न बदले। सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी का व्यापक संदेश यही है कि लोकतंत्र में अधिकार एकतरफा नहीं हो सकते। किसी एक वर्ग की आवाज बुलंद करने के लिए दूसरे वर्ग की आवाजाही और आजीविका बाधित करना लोकतांत्रिक भावना के अनुकूल नहीं है। लोकतंत्र की मजबूती इसी में है कि असहमति को जगह मिले और आम जनजीवन भी निर्बाध चलता रहे।

किसी ने बनाई पार्टी, किसी ने बदला दल

> लोकतंत्र में सबको चुनाव लड़ने का अधिकार है। आजकल चुनाव लड़ने से ज्यादा चुनावी दुकान खोलने का चलन बढ़ गया है। "माननीय" बनने की ऐसी होड़ लगी है कि जिसके पास चार लोगों का समर्थन नहीं, वह भी चार पहियों वाली गाड़ी पर अपना झंडा लगाकर पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बन बैठा है। किसी ने पार्टी बनाई तो किसी ने दल बदल लिया। नाम चाहे कुछ भी हो..! मकसद एक ही है – किसी तरह विधायक-सांसद की नेम प्लेट लग जाए। उत्तर प्रदेश से लेकर दिल्ली तक का राजनीतिक मौसम देखिए। जैसे ही चुनाव की आहट सुनाई देती है, वैसे ही कुछ रिटायर्ड अफसरों, पूर्व न्यायाधीशों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और हताश नेताओं के भीतर सोया हुआ 'जननायक' जाग जाता है।

राजनीति का नया शॉर्टकट..! माननीय बनने की होड़..! कोई अपनी पार्टी बना रहा है तो कोई दल बदल रहा है। यह हरकतें चुनावी आहट के साथ तेज हो रही हैं। सियासी हसरतें पूरी करने का चलन इस कंपन्न से झनझना उठा है। लोकतंत्र में सबको चुनाव लड़ने का अधिकार है। आजकल चुनाव लड़ने से ज्यादा चुनावी दुकान खोलने का चलन बढ़ गया है। "माननीय" बनने की ऐसी होड़ लगी है कि जिसके पास चार लोगों का समर्थन नहीं, वह भी चार पहियों वाली गाड़ी पर अपना झंडा लगाकर पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बन बैठा है। किसी ने पार्टी बनाई तो किसी ने दल बदल लिया। नाम चाहे कुछ भी हो..!

मकसद एक ही है - किसी तरह विधायक-सांसद की नेम प्लेट लग जाए। उत्तर प्रदेश से लेकर दिल्ली तक का राजनीतिक मौसम देखिए। जैसे ही चुनाव की आहट सुनाई देती है, वैसे ही कुछ रिटायर्ड अफसरों, पूर्व न्यायाधीशों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और हताश नेताओं के भीतर सोया हुआ 'जननायक' जाग जाता है। वे सोचते हैं, किसी पार्टी में जाकर टिकट मांगने से अच्छा है, अपनी ही पार्टी क्यों न बना ली जाए। टिकट मांगने का झंझट खत्म..! खुद ही टिकट बांटो, खुद ही अध्यक्ष बनो..! यह हसरतें पूरी करने का जो नया चलन है, वह चुनावी कैलेंडर के साथ और तेज हो गया है। 2027 के विधानसभा चुनाव अभी दूर हैं। पर उत्तर प्रदेश में अभी से सैकड़ों नई पार्टियों ने निर्वाचन आयोग के दरवाजे पर दस्तक दे दी है। कोई लखनऊ में प्रेस क्लब में पार्टी लांच कर रहा है तो कोई दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब में अपना घोषणा पत्र पढ़ रहा है। सोशल मीडिया पर पार्टी का लोगो, झंडा और एक जोशीला नारा- बस, बन गए राष्ट्रीय अध्यक्ष। रिटायर्ड अफसरों की राजनीति..! पेंशन के बाद पद की तलाश..! इस दौड़ में सबसे आगे हमारे सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारी हैं। जीवन भर फाइलों पर 'स्वीकृत' और 'अस्वीकृत' लिखने वाले ये अधिकारी रिटायरमेंट के बाद अचानक व्यवस्था को बदलने का सपना देखने लगते हैं। इस कड़ी में सबसे चर्चित नाम है विजय शंकर पांडे का। उत्तर प्रदेश कैडर के इस पूर्व आईएएस अधिकारी ने अपने कार्यकाल में भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग छेड़ने के लिए ख्याति अर्जित की थी। कहा जाता है कि उन्होंने प्रदेश के कई महाभ्रष्ट अधिकारियों को चिह्नित करने का बीड़ा उठाया था। उनकी छवि एक निर्भीक अधिकारी की थी। रिटायरमेंट के बाद उन्होंने सोचा कि व्यवस्था को फाइल से नहीं, मैदान से बदला जा सकता है। और फिर बना डाली अपनी पार्टी - लोक गठबंधन पार्टी। उनका तर्क है कि ईमानदार राजनीति ही भ्रष्टाचार का जवाब है। पर सवाल यह भी है कि क्या पार्टी बनाते ही जनता उनके पीछे चल देगी? इसी तरह एक और पूर्व आईएएस अधिकारी चंद्रपाल हैं। प्रशासन में लंबे अनुभव के बाद उन्होंने 'आदर्श समाज पार्टी' का गठन किया। उनका नारा है- समाज में आदर्श और समता स्थापित करना। वे दलित, पिछड़े और वंचित वर्ग की आवाज बनने का दावा करते हैं। प्रशासन में रहते हुए उन्होंने सिस्टम को अंदर से देखा। अब बाहर से उसे सुधारने निकले हैं। अब इस फेहरिस्त में नया नाम जुड़ा है -आईएएस दिव्या मित्तल का। अभी हाल ही में उन्होंने अपनी राजनीतिक पार्टी बनाने का ऐलान किया है। एक युवा, तेजतर्रार महिला अधिकारी के रूप में उनकी



पहचान रही है। उनका राजनीति में आना कई लोगों के लिए आश्चर्यजनक है तो कई लोगों के लिए यह संकेत है कि ब्यूरोक्रेसी में अब प्रतिभा घुटन महसूस कर रही है और उसे राजनीति में ऑक्सीजन तलाश रही है। क्या यह महज संयोग है कि ये सभी चुनाव से ठीक पहले सक्रिय होते हैं? नहीं, यह रणनीति है। चुनाव वह मौसम है, जब मीडिया को नए चेहरे चाहिए, जनता को नए विकल्प की तलाश होती है और ऐसे में अपनी दुकान सजाना सबसे आसान होता है। दलित राजनीति से राष्ट्रीय राजनीति तक का प्रयोग..! यह केवल आईएएस अधिकारियों तक सीमित नहीं है। इस ट्रेंड के पुराने खिलाड़ी भी हैं। उदित राज इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं। भारतीय राजस्व सेवा से लेकर राजनीति तक उनका लंबा सफर रहा है। उन्होंने सबसे पहले इंडियन जस्टिस पार्टी बनाई थी। दलितों को न्याय दिलाने के नाम पर बनी यह पार्टी बाद में कांग्रेस, फिर भाजपा में विलीन होती-निकलती रही। उदित राज ने दिखाया कि पार्टी बनाना एक तरह से अपनी राजनीतिक कीमत बढ़ाने का तरीका भी है। आपकी अपनी पार्टी है, तो बड़ी पार्टियां आपको गठबंधन में लेने के लिए मजबूर होंगी। यही फॉर्मूला अब हर कोई अपना रहा है। जिसके पास 5 हजार वोट भी नहीं हैं, वह भी कहता है- हम 20 सीटों पर चुनाव लड़ेंगे और किंगमेकर बनेंगे। हकीकत यह है कि वे किंगमेकर नहीं, अपने ही घर के मेकर भी नहीं बन पाते। इन दुकानों के बनने के तीन बड़े कारण हैं। पहला - टिकट का अभाव और व्यक्तिवाद का उभार। बड़ी पार्टियों में टिकट के लिए लंबी लाइन है। वहां जाति, पैसा और परिवारवाद हावी है। ऐसे में एक रिटायर्ड अफसर या सामाजिक कार्यकर्ता को लगता है कि वहां उसकी पूछ नहीं होगी। इसलिए वह अपनी पार्टी बनाकर खुद को 'हाईकमान' घोषित कर देता है। दूसरा - चुनाव एक उद्योग बन गया है। पार्टी बनाइए। चंदा लीजिए। थोड़ा प्रचार कीजिए और अगर एक-दो सीटों पर 10-15 हजार वोट काट दिए, तो बड़ी पार्टियों से सौदेबाजी का रास्ता खुल जाता है। कई पार्टियां तो इसी वोट-कटवा की भूमिका के लिए ही बनाई जाती हैं। तीसरा - सोशल मीडिया का भ्रम। फेसबुक पर 10 हजार फॉलोअर और यूट्यूब पर 2 लाख व्यूज देखकर लोगों को लगता है कि ये व्यक्ति लोकप्रिय है। यह वर्चुअल लोकप्रियता उन्हें जमीन पर भी नेता होने का भ्रम दे देती है। वे भूल जाते हैं कि लाइक वोट में नहीं बदलता। सवाल यह है कि क्या यह लोकतंत्र के लिए खतरा है? जवाब है- नहीं, पर चेतावनी जरूर है। भारतीय निर्वाचन आयोग के पास 2800 से ज्यादा पंजीकृत दल हैं, पर 90% दल ऐसे हैं जिन्होंने कभी एक भी चुनाव नहीं लड़ा। ये सिर्फ कागजों पर हैं। बैलेट पेपर पर एक ही नाम से मिलते-जुलते 4-5 निर्दलीय और छोटी पार्टियों के चुनाव चिह्न देखकर वोटर कन्फ्यूज हो जाता है। और यही इनका असली खेल है - वोट काटो, चुनाव प्रभावित करो। दूसरी तरफ, यह लोकतंत्र की जीवंतता भी है। अगर कोई विजय शंकर पांडे या चंद्रपाल या दिव्या मित्तल ईमानदारी से कोई विकल्प देना चाहते हैं, तो उनका स्वागत होना चाहिए। समस्या तब है, जब पार्टी का मकसद सिर्फ 'माननीय' बनने की हसरत पूरी करना हो, जनता की सेवा नहीं। पार्टी बनाना आसान है। पर पार्टी को विचार देना, कैडर बनाना और जनता का विश्वास जीतना सबसे कठिन तपस्या है। वह तपस्या न तो प्रेस कॉन्फ्रेंस से होती है। न ही लखनऊ-दिल्ली के होटलों में पार्टी लांच करने से। लोकतंत्र में दुकानें बहुत खुल गई हैं। पर ग्राहक यानी जनता बहुत समझदार हो गई है। वह जानती है कि कौन सेवा के लिए आया है, तो कौन मेवा के लिए और सिर्फ अपनी नेम प्लेट के लिए दलबदल कर बैठा है। चुनाव आएगा तो जनता इन दुकानों का शटर खुद ही गिरा देगी।

(लेखक कुशाभाऊ ठाकरे विवि, रायपुर के कुलपति हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया haribhoomi@gmail.com पर दे सकते हैं।

आध्यात्मिक

विवेक मिश्रा



33 लाख दीप प्रज्ज्वलन का नया रिकॉर्ड बनाने का प्रयास

भारत की आध्यात्मिक धारा प्रकट से अप्रकट की ओर प्रवाहित है, इसी अंतःकरण के दीपपर्व का बाह्य मूर्त चित्रण दीपावली है। अपने परम आराध्य के प्रत्यक्ष सानिध्य की अभिलाषा में रत एक नगर का रोम-रोम आह्लादित हो उठता है। अयोध्या से आशय उस भूमि से है, जिस पर युद्ध द्वारा विजय नहीं प्राप्त की जा सकती है, युद्ध अर्थात द्वंद्व से निर्मित संघर्ष। जिस धरा या स्थान पर युद्धकारक द्वंद्व का अंत होता हो, वहां स्वतः ही राम अर्थात रमणीय आनंद का निवास होता है। योगीजन भी इसी राममयी ब्रह्म तत्व में सदैव लीन मिलते हैं। भारतीय सनातन संस्कृति का यह पौराणिक दर्शन, आज हमारे समक्ष अयोध्या के भव्य व दिव्य दीपोत्सव के रूप में साकार होता है। दीपावली के शुभयोग पर आगामी 7 नवंबर 2026 को सरयू जी के 56 घाटों पर एकसाथ 33 लाख दीप प्रज्वलित कर एक नया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड स्थापित करने का प्रयास होगा। श्री राम जन्मभूमि मंदिर के गर्भगृह में भी 1 लाख 11 हजार दियों का प्रज्वलन होगा। ज्ञात हो विगत वर्ष 2025 में 26 लाख से अधिक दीप प्रज्वलित कर रिकॉर्ड स्थापित किया गया है। गिनीज रिकॉर्ड स्थापित करने हेतु, सटीक मापदंडों की पालना करनी होती है। निगरानी रखने के लिए गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स की एक आधिकारिक टीम मौके पर मौजूद रहती है। दीयों को व्यवस्थित रूप से दीप्त करने के लिए अवध विश्वविद्यालय समेत अन्य कॉलेजों के 35000 वालेंटियर को नियुक्त किया गया है। आयोजनों में 45 मिनट लंबा ड्रोन और लेजर शो भी रहेगा, जिसमें रामायण के प्रसंगों का सजीव चित्रण होगा। इस वर्ष 10 वे दीपोत्सव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह शामिल होंगे, जबकि प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत कई अन्य कैबिनेट मंत्री भी उपस्थित रहेंगे। 2027 के विधानसभा चुनावों से पूर्व इस बार का सांस्कृतिक कार्यक्रम, राजनीतिक पक्षों के चुनावी समीकरणों से भी जुड़ेगा। पिछले दिनों अयोध्या में सपा प्रमुख अखिलेश यादव का दौरा हुआ और वे श्री राम जन्मभूमि मंदिर दर्शन करने नहीं पहुंचे। सामुदायिक वोट बैंक को साधने की कोशिशों का यह एक सुनियोजित क्रम रहा है। विपक्षी दल, ऐसे आयोजनों में सरकारी धन की फिजूलखर्ची और सरकार की ब्रांडिंग पर आरोप लगाते हैं। बीते दिनों प्रधानमंत्री के जन्मदिन और सार्वजनिक जीवन में 25 वर्ष पूर्ण होने पर, आयोजित 'आशीर्वाद का दिया'नामक कार्यक्रम की तीखी आलोचना विपक्षीय दलों व चिंतको ने की थी। मुख्य विरोध उत्तर प्रदेश और बिहार से ही शुरू हुआ था। बाढ़ के बीच जिला प्रशासन व शिक्षा विभाग ने उत्सव मनाने के आधिकारिक निर्देश जारी किए , जिन्हें बाद में वापस लिया गया। प्रथम दृष्टया, यह प्रश्न उचित प्रतीत होता है। इस स्तर के बड़े आयोजनों में जहां 33 लाख मिट्टी के दिये, 65 लाख बातियां, लगभग 55 हजार लीटर सरसों का तेल और 150 किलो कपूर का इस्तेमाल होने वाला है । इन व्यवस्थाओं में होने वाले खर्चों का योग कितने अंकों तक पहुंचता है? इसका अनुमान ही हम लगा सकते हैं। परन्तु एक दूसरा व्यावसायिक पक्ष यह भी है कि इस एकमुश्त मांग की आपूर्ति में कई छोटे-बड़े व्यापारी, व्यवसायी या श्रमिक वर्ग लगे होते हैं। इन बड़े आयोजनों के माध्यम से, वह पर्याप्त लाभ व रोजगार पाते हैं। पर्यटन, विज्ञापन और स्पॉन्सरशिप के माध्यम से राजकीय कोष को भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष लाभ पहुंचता है। वालंटियर के रूप में महाविद्यालयों के छात्रों का सहयोग,उन्हें संस्कृति से जुड़ने और परस्पर समन्वय के अवसर प्रदान करता है। भव्य आयोजनों से प्रतिष्ठित होती, नगर विशेष की अंतर्राष्ट्रीय छवि संपूर्ण राष्ट्र के लिए प्रगति के पथ को प्रशस्त करती है। अयोध्या में होने वाले दीपोत्सव को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखे जाने की अनिवार्यता को भी समझना चाहिए। मिट्टी के दीपक, बातियां, घी और सरसों का तेल पूर्णतः बायो डिग्रेडेबल हैं, अर्थात यह सभी सरलता से विघटित हो पुनः मिट्टी अथवा कार्बन स्वरूप में मिल जाते हैं। सरसों के तेल में 'एलील थियोआइसोसायनेट' नामक सक्रिय यौगिक होता है,जो तीखी गंध देता है। भारत भूमि के सबसे उन्नत आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम की जन्मस्थली अयोध्या में प्रत्येक वर्ष नव-नवीन कीर्तिमान स्थापित करता, भव्य-दिव्य दीपोत्सव का आयोजन, सहज सर्वमान्य होना चाहिए। प्रभु राम तो स्वयं रूपर्वरू अर्थात जोड़ने वाले और ' उत्सव' अर्थात ऊपर उठते श्रेष्ठतम यज्ञ,उत्पत्ति और आनंद के स्वरूप हैं। यह तो हमारा दृष्टिकोण है कि, हम प्रभु मूर्त को किस दृष्टि से देख पाते हैं । जैसा कि, श्री राम चरित्र मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैंः- 'जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन्ह तैसी॥

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

चरित्र गठन की व्यायामशाला है संसार

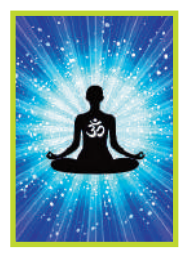

संकलित

दर्शन

संसार न तो अच्छा है, ना बुरा। प्रत्येक मनुष्य अपने लिए अपना-अपना संसार बना लेता है। हमारी मानसिक अवस्था के अनुसार ही हमें यह संसार भला या बुरा प्रतीत होता है। अग्नि स्वयं में अच्छी है न बुरी। जब यह हमें गर्म रखती है, तो हम कहते हैं यह कितनी अच्छी है, जब हमारी अंगुली जल जाती है, तो हम इसे दोष देते हैं। यही हाल संसार का है। संसार स्वयं पूर्ण है। पूर्ण का अर्थ यह है कि इसमें अपने सभी प्रयोजन पूर्ण करने की क्षमता है। हमें जान लेना चाहिए कि हमारे बिना भी यह संसार बड़े मजे से चलता जाएगा। हमें उसकी सहायता करने के लिए माथापच्ची करने की आवश्यकता नहीं। परंतु फिर भी हमें सदैव परोपकार करते ही रहना चाहिए। यदि हम सदैव यह ध्यान रखें कि दूसरों की सहायता करना एक सौभाग्य है, तो परोपकार करने की इच्छा एक सर्वोत्तम प्रेरणा शक्ति है। एक दाता के ऊंचे आसन पर खड़े होकर अपने हाथ में दो पैसे लेकर यह मत कहो, 'ऐ भिखारी, ले, मैं तुझे यह देता हूं।' तुम स्वयं इस बात के लिए कृतज्ञ होओ कि इस संसार में तुम्हें अपनी दयालुता का प्रयोग करने और इस प्रकार पूर्ण होने का अवसर प्राप्त हुआ। धन्य पाने वाला नहीं, देने वाला होता है। भलाई के सभी कार्य हमें शुद्ध और पूर्ण बनाने में सहायता करते हैं। यह संसार न तो तुम्हारी सहायता का भूखा है और ना मेरी। परंतु फिर भी हमें निरंतर कार्य करते रहना चाहिए, परोपकार करते रहना चाहिए। क्योंकि इससे हमारा ही भला है। यही एक साधन है, जिससे हम पूर्ण बन सकते हैं। यदि हमने किसी गरीब को कुछ दिया, तो वास्तव में हम पर उसका आभार है, क्योंकि उसने हमें इस बात का अवसर दिया कि हम अपनी दया की भावना उस पर काम में ला सकें।

मूर्ख साधू और ठग

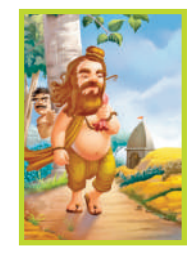

संकलित

प्रेरणा

किसी गांव के मंदिर में देव शर्मा नाम का एक प्रतिष्ठित साधू रहता था। उसे अपने भक्तों से दान में तरह- तरह के वस्त्र, उपहार, खाद्य सामग्री और पैसे मिलते थे। उन वस्त्रों को बेचकर साधू ने काफी धन जमा कर लिया था। वह अपने धन को एक पोटली में रखता था और उसे हमेशा अपने साथ लेकर ही चलता था। उसी गाँव में एक ठग रहता था। ठग हमेशा साधू का पीछा किया करता था, लेकिन साधू उस गठरी को कभी अपने से अलग नहीं होने देता। उसने साधू से मिन्नत की कि वह उसे अपना शिष्य बना ले क्योंकि वह ज्ञान प्राप्त करना चाहता था। साधू तैयार हो गया और इस तरह से वह ठग साधू के साथ ही मंदिर में रहने लगा। ठग मंदिर की साफ सफाई से लेकर अन्य सभी कार्य भी करता था। एक दिन साधू को पास के गांव में एक अनुष्ठान के लिए आमंत्रित किया गया, साधू ने वह आमंत्रण स्वीकार किया और निश्चित दिन साधू अपने शिष्य के साथ अनुष्ठान में भाग लेने के लिए निकल पड़ा। रास्ते में एक नदी पड़ी और साधू ने स्नान करने की इच्छा व्यक्त की। उसने पैसों की गठरी को एक कम्बल के भीतर रखा और उसे नदी के किनारे रख दिया। उसने ठग से सामान की रखवाली करने को कहा और खुद नहाने चला गया। ठग को तो कब से इसी पल का इंतजार था। जैसे ही साधू नदी में डुबकी लगाने गया, वह रुपयों की गठरी लेकर चम्पत हो गया। शिक्षाः किसी अजनबी की चिकनी चुपड़ी बातों में आकर ही उस पर विश्वास नहीं कर लेना चाहिए।

सटाका



आज की पाती

अपराध की काली कमाई सफेद करने का धंधा

मनी लॉन्ड्रिंग अर्थात धनशोधन आज केवल आर्थिक अपराध नहीं रह गया है, बल्कि यह संगठित अपराध, भ्रष्टाचार, मादक पदार्थों की तस्करी, आतंकवाद और अवैध व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण वित्तीय आधार बन चुका है। सामान्य शब्दों में कहें तो मनी लॉन्ड्रिंग वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से अपराध से अर्जित धन के वास्तविक स्रोत को छिपाकर उसे वैध अथवा कानूनी रूप से अर्जित धन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। अपराधी जानते हैं कि केवल अवैध तरीके से धन कमाना पर्याप्त नहीं है। उस धन को ऐसी व्यवस्था में शामिल करना भी आवश्यक है जिससे उसकी वास्तविक उत्पत्ति का पता लगाना कठिन हो जाए।

– राजेश शर्मा, हिसार

करंट अफेयर

न्यूयॉर्क में 30 साल में पहली बार खसरे से बच्चे की मौत

अमेरिका के न्यूयॉर्क राज्य के उत्तरी ग्रामीण इलाके में खसरे से संक्रमित एक बच्चे की मौत हो गई है। राज्य के अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी देते हुए बताया कि पिछले 30 साल में राज्य में खसरे से मौत का यह पहला मामला है। न्यूयॉर्क की गवर्नर कैथी होचुल ने बताया कि बच्चे की मौत सिरैक्यूज से करीब 93 150 किलोमीटर उत्तर में स्थित लुईस काउंटी में हुई। अमेरिका ने उच्च टीकाकरण दर बनाए रखकर 2000 में देश के भीतर खसरे के प्रसार को रोक दिया था। हाल के वर्षों में टीकाकरण की दर में गिरावट आई है और यह इस बीमारी के प्रकोप को रोकने के लिए जरूरी 95 प्रतिशत के स्तर से नीचे पहुंच गई है। डेमोक्रेटिक पार्टी की नेता होचुल ने बच्चे की मौत पर दुख जताते हुए कहा, ' 'यह घटना इस बात की याद दिलाती है कि जब वाशिंगटन जानबूझकर अमेरिकियों को ऐसी बीमारियों से बचाने की दशकों की प्रगति को कमजोर करता है तो कितना कुछ दांव पर लग जाता है।'' रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र (सीडीसी) ने इस साल अमेरिका में खसरे से संबंधित तीन मौतों की पुष्टि की है। विभिन्न राज्यों के स्वास्थ्य विभागों ने इससे अधिक मौतों की जानकारी दी है।



ऑफ बीट

अब बलगम का रंग बताएगा आपकी सेहत

क्या आपने कभी सोचा है कि जब आप बीमार होते हैं तो आपके बलगम का रंग अलग क्यों होता है? शायद आप यह सवाल पूछने वाले पहले व्यक्ति नहीं हैं। वास्तव में कई कारण हैं कि जब आप बीमार होते हैं तो आपके नाक के बलगम का रंग बदल जाता है। नाक के बलगम का रंग और गाढ़ापन आपकी रोग प्रतिरोध प्रणाली के बारे में रोचक जानकारी दे सकता है, और यह भी बता सकता है कि आपका शरीर बीमारियों के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करता है। बलगम हमारे नाक के मार्ग में स्थित ऊतकों द्वारा निर्मित होता है। अक्सर इसे केवल एक दिक्कत के रूप में देखा जाता है, लेकिन बलगम एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। असल में यह एक सुरक्षात्मक अवरोधक के रूप में कार्य करता है, जो धूल, किटाणु, वायरस और अन्य कणों को श्वसन प्रणाली के गहरे भागों तक पहुंचने से रोकता है। हमारे नाक के बलगम में मौजूद लाइसोजाइम और लैक्टोफेरिन जैसे एंजाइम में रोगाणुरोधी गुण भी होते हैं। वे किटाणु की कोशिका को तोड़ते हैं और किटाणु के विकास को सीमित करने में मदद करते हैं। यह सुरक्षात्मक भूमिका बलगम को प्रतिरोधक की एक महत्वपूर्ण रेखा बनाती है, ऐसे समय में भी जब हम अस्वस्थ न हों।



ट्रेंड

पिंक लाइन

पुणे मेट्रो की नई 'पिंक लाइन' इतनी खास क्यों है? यह 23 किमी लंबी लाइन हिंजवडी के आईटी हब को शिवाजीनगर से जोड़ती है। इसका संचालन महिलाएं करेंगी। इससे पुणे में 'जीवन सुगमता' को काफी बढ़ावा मिलेगा! -नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री



सेहत के साथ खिलवाड़ नहीं

तुर्कमान गेट पर 7,000 किलो मिलावटी खोया जब्त किया गया! त्योहारी सीजन के दौरान और पूरे साल दिल्ली भर में छापेमारी तेज की जाएगी। यह कार्रवाई लगातार जारी रहेगी। किसी को भी मुनाफे के लिए लोगों की सेहत के साथ खिलवाड़ करने की इजाजत नहीं दी जाएगी।

- रेखा गुप्ता, सीएम, नई दिल्ली



बीजेपी खुद अराजक

बीजेपी तो खुद ही अराजकता है! बीजेपी के राज में कोई अपराधी नहीं पकड़ा जाएगा, क्योंकि अपराधी चाहे जो भी हो, वह बीजेपी में कहीं न कहीं कोई पदाधिकारी जरूर होगा। महिलाओं के आंसू बीजेपी की सत्ता को बहा ले जाएंगे!

- अखिलेश यादव, सांसद, सपा



महंगाई मुक्ति यात्रा

भ्रष्टाचार और आसमान छूती कीमतों के खिलाफ गोवा के लोगों को एकजुट करने के संकल्प के साथ 'आप' 26 नवंबर से 19 दिसंबर तक 'महंगाई मुक्ति यात्रा' शुरू करेगी। हमारी व्यापक और परखी हुई गारंटियां सरल और सीधा समाधान देती हैं। -अरविंद केजरीवाल, पूर्व सीएम, नई दिल्ली



अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

पीबी-2, चतुर्थ तल, मानसरोवर कॉम्पलैक्स, वार्ड नं. 50, शिवाजी नगर, निकट रानी कमलापति रेलवे स्टेशन, होशंगाबाद रोड, भोपाल, (म.प्र.) 462016

aapkepatra.haribhoomi@gmail.com पर भेज सकते हैं।